अध्याय - 14

हमारे इतिहासकार कालीकिंकर दत्त 1905-1982

आप पिछली कक्षाओं में भारत के प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास से संबंधित बिहार के कुछ महान इतिहासकारों के बारे में पढ़ चुके हैं। इस कक्षा में आप आधुनिक भारत के इतिहास लेखन पर काम करने वाले इतिहासकार डा० कालीकिंकर दत्त के बारे में पढ़ेंगे।

बिहार में इतिहास विषयक शोध कार्य करने की आधुनिक परम्परा की शुरुआत सर यदुनाथ सरकार के समय से ही है, इसी श्रृखंला में डा० सुविमल चन्द्र सरकार के निर्देशन में शोधकार्य करनेवाले कालीकिंकर दत्त ने भविष्य में अपने आपको महान् इतिहासकार के रूप में स्थापित किया। डा० दत्त ने बिहार एवं बंगाल के अंतिम तीन शताब्दियों के इतिहास का गहन अध्ययन एवं मंथन किया। इनके प्रयासों के कारण बिहार का आधुनिक इतिहास सही स्वरूप में सबके सामने आया।

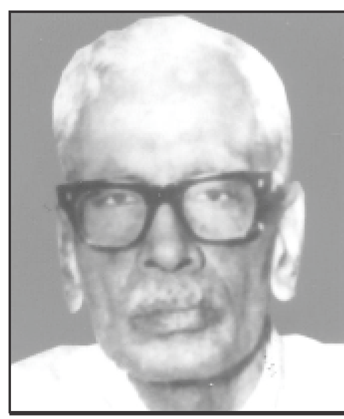

चित्र 1 – इतिहासकार के. के. दत्त

डा० कालीकिंकर दत्त का जन्म पाकुर जिला के झिकरहाटी गाँव में 1905 ई० में हुआ था। इनके पिता उच्च विद्यालय के शिक्षक थे। अपने पिता के विद्यालय महेशपुर उच्च विद्यालय से ही इन्होंने प्रवेशिका (मैट्रिक) की परीक्षा पास की। इन्होंने 1927 ई० में कलकत्ता विश्वविद्यालय से एम०ए० की परीक्षा पास की। इन्होंने डा० एस० सी० सरकार के निर्देशन में पटना कॉलेज के इतिहास विभाग में बंगाल के आर्थिक इतिहास पर काम करना प्रारंभ किया। इस कार्य के लिए इन्हें बिहार एवं उड़ीसा सरकार की छात्रवृति भी मिली। इसी कार्य के लिए कलकत्ता विश्वविद्यालय से प्रेमचन्द्र छात्रवृति भी 1931 ई० में इन्हें प्राप्त हुई। 1930 में ये पटना कॉलेज इतिहास विभाग में व्याख्याता भी नियुक्त हुए। 'अलीवर्दी एण्ड हिज टाइम्स' नामक शोध–प्रबंध पर इन्हें कलकत्ता विश्वविद्यालय से पी०एच०डी० की उपाधि मिली। लगभग 40 वर्ष की उम्र में

(1944) इनकी प्रोन्नति शैक्षणिक सेवा वर्ग–1 में हुई। अगले ही साल सुविमल चन्द्र सरकार के अवकाश ग्रहण करने के बाद ये इतिहास विभाग के अध्यक्ष बन गए। इन्हें 1958 में पटना कॉलेज का प्राचार्य भी बनाया गया। 1960 ई० में अवकाश ग्रहण करने के बाद काशीप्रसाद जायसवाल शोध संस्थान के पूर्णकालिक निदेशक 28 फरवरी 1962 तक रहे एवं बिहार राज्य अभिलेखागार के प्रभारी निदेशक वे 7 मई 1972 तक रहे। डा० दत्त मगध विश्वविद्यालय के संस्थापक उप कुलपति (आजकल कुलपति) रहे। तीन साल की निर्धारित अवधि पूरा करने के बाद 14 मार्च 1965 को पटना विश्वविद्यालय के उपकुलपति बने। दो पूर्ण कालावधि पूरा करने के बाद 1971 में सेवा निवृत हुए। अभी तक बिहार में लगातार इतने वर्षों तक किसी ने भी उप कुलपति पद का निर्वाह नहीं किया है। डा० दत्त शोध एवं सर्वेक्षण कार्य से संबंधित अन्य संस्थाओं से भी जुड़े रहे।

कई पदों पर आसीन होने के बावजूद डा० दत्त की प्रतिष्ठा का आधार लेखन एवं शोधकार्य ही था। उन्होंने पचास से भी अधिक पुस्तकों का लेखन एवं संपादन कार्य किया। इनके द्वारा कुछ पुस्तकों का लेखन उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों की जरूरतों को ध्यान में रखकर लिखी गई तो कुछ पुस्तकों का संपादन कार्यालय दायित्व एवं सरकारी–गैर सरकारी अनुरोध पर किया गया।

1. टेक्सट बुक ऑफ मोर्डन इंडियन हिस्ट्री, इलाहाबाद से 1934 में दो भागों में प्रकाशित हुई। इस पुस्तक को डा० दत्त ने सुबिमलचन्द्र सरकार के साथ मिलकर लिखा। इस पुस्तक का हिन्दी संस्करण का अनुवाद भारत का आधुनिक इतिहास (प्रथम भाग) एवं आधुनिक भारत वर्ष का इतिहास (द्वितीय भाग) नाम से प्रख्यात इतिहासकार रामाशरण शर्मा द्वारा किया गया।

2. एडवांस्ड हिस्ट्री ऑफ इंडिया तीन भागों में आर०सी० मजूमदार एवं एच०सी० राय चौधरी के साथ लिखी जिसका अनुवाद भारत का वृहत् इतिहास नाम से डा० योगेन्द्र मिश्र ने की।

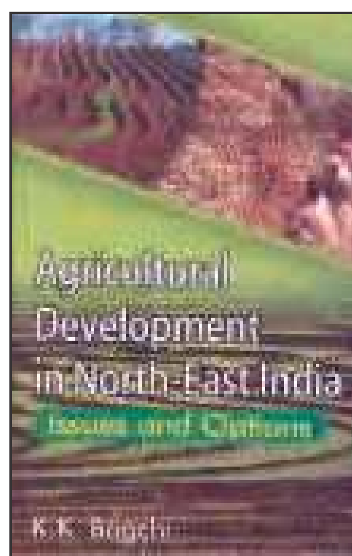

चित्र 2

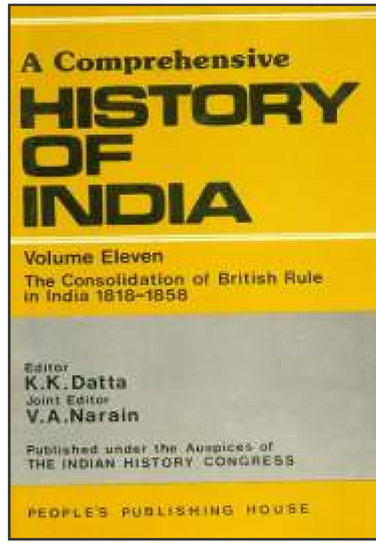

चित्र 3

इनकी महत्वपूर्ण सम्पादित पुस्तकों में

1. हिस्टोरिकल **मिस्सेलेनी**

2. अनरेस्ट एगेंस्ट ब्रिटिश रूल इन बिहार

3. राइटिंग्स एण्ड स्पीचेज ऑफ महात्मा गांधी रिलेटिंग टू बिहार 1917–47

4. सम द् फरमान्स, सन्स ऐंड पर्वानाज़ (1718–1802)

5. इंट्रोडक्सन ऑफ बिहार आदि प्रमुख हैं।

इनके द्वारा लिखित महत्वपूर्ण पुस्तकों में हिस्ट्री ऑफ फ्रीडम मूवमेंट इन बिहार, तीन भागों में (1956–58) पटना से प्रकाशित हुई। यह बिहार सरकार द्वारा प्रायोजित पुस्तक थी। इस पुस्तक के सामग्री संकलन हेतु कई अभिलेखपालों को लगाया गया जिन्होंने बिहार के कोने–कोने से स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित दुर्लभ पुस्तकों, पंफलेटों बुकलेटों का संकलन किया। यह पुस्तक आजादी की लड़ाई का मुख्य स्रोत तो बनी ही, 1857 की क्रांति की शताब्दी ग्रंथ भी बन गयी। प्रथम खण्ड में 1857 से 1928, द्वितीय खण्ड में 1929 से 1941 तथा तृतीय खण्ड में 1942 से 1947 तक के इतिहास का विस्तृत विवरण है। इस पुस्तक के महत्व को देखते हुए बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी ने बिहार में स्वातंत्र्य आंदोलन का इतिहास नाम से हिन्दी में अनुवाद कराया।

इसके अतिरिक्त इन्होंने **गांधी जी इन बिहार** (पटना 1969), **बायोग्राफी ऑफ कुँवर सिंह एण्ड अमर सिंह, राजेन्द्र प्रसाद** (नई दिल्ली 1970) के साथ–साथ **रिफ्लेक्शन ऑन द म्यूटिनी** (कलकत्ता 1966) की भी रचना की।

इनके द्वारा लिखित बहुत सामग्रियों का आज तक प्रकाशन नहीं हो पाया। ये **रिजनल रिकार्ड्स सर्वे कमिटी की स्थापना** के समय से ही जुड़े रहे। इस कमिटी का वार्षिक प्रतिवेदन आज शोधार्थियों के लिए स्रोत तक पहुँचने के साधन के रूप में काम कर रहा है। इनका पूरा लेखन बिहार के आधुनिक इतिहास लेखन के क्षेत्र में आधार की तरह है। इन्होंने

इतिहास की लगभग पचासों पुस्तकों का लेखन एवं संपादन किया। जिसमें उनकी सबसे महत्वपूर्ण कृती Comprehensive History of Bihar Volume -III (कम्प्रीहेन्सिव हिस्ट्री आफ बिहार खण्ड–III)।

डा० दत्त सदैव छात्रों के हित का ख्याल रखते थे। उन्हें प्रतियोगिता परीक्षा से लेकर शोधकार्य हेतु प्रोत्साहित करते थे। इन्होंने प्रतियोगिता परीक्षा (आई०ए०एस०) को ध्यान में रखते हुए आई०ए० से एम०ए० तक इतिहास के पाठ्यक्रम को संशोधित करवाया। आई०ए०एस० की परीक्षा में शामिल होनेवाले छात्रों के लिए कोचिंग की भी व्यवस्था कराई।

डा० कालीकिंकर दत्त ने इतिहास के क्षेत्र में देश–विदेश की कई संस्थाओं की स्थापना एवं विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। के०पी० जायसवाल शोध संस्थान, अभिलेखागार, रिजिनल रेकॉर्डस कमिटी, ए० एन० सिन्हा समाज अध्ययन संस्थान आदि की स्थापना में इनका महत्वपूर्ण योगदान था। खुदाबख्स ओरियंटल पब्लिक लाइब्रेरी, सिन्हा लाईब्रेरी, रामकृष्ण मिशन, गांधी संग्रहालय के साथ भी इनका लम्बा सहयोग रहा।

ये बोधगया स्थित बौद्ध मंदिर के व्यवस्थापक समिति के सदस्य भी रहे। इन्होंने इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस की 1958 में त्रिवेंद्रम् कांग्रेस की अध्यक्षता भी की। कई वर्षों तक चेन्नई स्थित इण्डो ब्रिटिश हिस्ट्रोरिकल सोसाइटी के निदेशक रहे।

डा० के० के० दत्त की प्रतिभा एवं कार्यों को देखते हुए इन्हें समाज में मान–सम्मान भी खूब मिला। मोआर्ट स्वर्णपदक और ग्रिफित पुरस्कार प्राप्त करने के बाद पटना कॉलेज में जो अभिनन्दन समारोह हुआ आज तक का शिक्षकों एवं छात्रों का सबसे बड़ा जमावड़ा है। ये एशियाटिक सोसाइटी कलकत्ता के मानद् सदस्य भी रहे। वर्द्धमान विश्वविद्यालय ने इन्हें डी०लिट्० की उपाधि भी प्रदान की।

इस प्रकार डा० दत्त अध्ययन–अध्यापन शोध और लेखन के उच्च मानदण्ड का निर्वाह करते हुए 24 मार्च 1982 को परलोक वासी हो गए। इन्होंने लेखन–कार्य को प्रतिदिन के धार्मिक अनुष्ठान की तरह माना। अपनी तरह कार्य करने के लिए अपने सहकर्मियों, छात्रों एवं लेखन कार्य से जुड़े लोगों को वे सदैव प्रेरणा देते रहें। इनका मानना था कि अगर प्रतिदिन एक पेज भी लिखा जाए तो प्रत्येक साल एक किताब लिखी जा सकती है।